विचार बिन्दु

न्याय युक्त व्यवहार करना, सौंदर्य से प्रेम करना तथा सत्य की भावना को हृदय में धारण करके विनयशील बने रहना ही सबसे बड़ा धर्म है।

–डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

राजस्थान 2050: स्थाई समृद्धि की योजना

राजस्थान, रेगिस्तान की भूमि, जहां थार के विशाल रेत टीले आकाश को छूते हैं और अरावली की पहाड़ियां शाश्वत गौरव की गाथा गाती हैं, हमेशा से ही संघर्ष और विजय की प्रतीक रहा है। यह राज्य, जो कभी राजपूताना के योद्धाओं की वीरता से गूंजता था, आज 21वीं सदी के दौर में एक नई क्रांति की दहलीज पर खड़ा है। 2050 तक राजस्थान को स्थाई समृद्धि का केंद्र बनाने की योजना न केवल एक दस्तावेज है, बल्कि एक संकल्प है एक ऐसा विजन जो आर्थिक उन्नित, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक उत्थान को एक सूत्र में बांधता है। यह योजना राजस्थान की अनूठी भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है, जहां रेगिस्तान को हरित अभयारण्य में बदलना, जल संकट को अवसर में बदलना और युवा ऊर्जा को विकास का इंजन बनाना मुख्य लक्ष्य हैं।

इस योजना का आधार है सतत विकास का मॉडल, जो संयुक्त राष्ट्र के सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (एसडीजी) से प्रेरित है। राजस्थान सरकार ने 2021 में शुरू की गई इस लॉन्ग-टर्म विजन को 2050 तक विस्तार दिया है, जिसमें जीडीपी को वर्तमान 15 लाख करोड़ रुपये से बढ़ाकर 50 लाख करोड़ रुपये करने का लक्ष्य है। लेकिन यह केवल आंकड़ों की दौड़ नहीं है; यह राजस्थानी परिवारों की आय को दोगुना करने, बेरोजगारी दर को 3 प्रतिशत से नीचे लाने और हर गांव को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का सपना है। योजना के केंद्र में है हरित राजस्थान अभियान, जो थार रेगिस्तान के 60 प्रतिशत हिस्से को वनाच्छादित करने का वादा करता है। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के विस्तार से सिंचाई क्षेत्र को दोगुना किया जाएगा, जिससे कृषि उत्पादकता 300 प्रतिशत बढ़ेगी। कल्पना कीजिए, जहां आज रेत के टीले हैं, वहां 2050 तक फसलें लहलहा रही होंगी बाजरा, ज्वार और मूंगफली के साथ-साथ जैविक फल और सब्जियां।

कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए योजना में स्मार्ट फार्मिंग को बढ़ावा दिया जाएगा। ड्रोन तकनीक से बीज बोना, एआई-आधारित मिट्टी परीक्षण और सौर ऊर्जा से चलने वाले ड्रिप इरिगेशन सिस्टम हर किसान तक पहुंचेंगे। राजस्थान के 70 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को लाभान्वित करने के लिए किसान समृद्धि योजना के तहत 10 लाख ग्रीनहाउस स्थापित किए जाएंगे। इससे न केवल उत्पादन बढ़ेगा, बल्कि जल उपयोग 50 प्रतिशत कम होगा। इसके साथ ही, पशुपालन को आधुनिक बनाया जाएगा डेयरी फार्मिंग में जेनेटिकली इम्प्रूव्ड नस्लें जैसे होल्स्टीन-फ्रीजियन गायें और भेड़-बकरी पालन में उन्नत तकनीकें अपनाई जाएंगी। 2050 तक राजस्थान भारत का सबसे बड़ा जैविक कृषि उत्पादक राज्य बनेगा, जहां राजस्थानी थार ब्रांड वैश्विक बाजार में छाएगा। यह स्थाई समृद्धि का पहला स्तंभ है जमीन से जुड़ी आत्मनिर्भरता।

औद्योगिक विकास में राजस्थान 2050 योजना दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) को अपनी रीढ़ बनाती है। जयपुर, अलवर, कोटा और भीलवाड़ा जैसे नोड्स को स्मार्ट इंडस्ट्रियल क्लस्टर्स में बदला जाएगा, जहां सौर ऊर्जा, विनिर्माण और आईटी हब फलेंगे-फूलेंगे। राज्य की सौर क्षमता 100 गीगावाट तक पहुंचेगी, जो भारत की कुल सौर ऊर्जा का 25 प्रतिशत होगी। उदाहरणस्वरूप, भादला सोलर पार्क को 10 गुना विस्तार देकर विश्व का सबसे बड़ा सोलर हब बनाया जाएगा। यह योजना हरित ऊर्जा से न केवल ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करेगी, बल्कि 50 लाख नौकरियां पैदा करेगी। सीमेंट और निर्माण उद्योग, जो राजस्थान की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, को ग्रीन टेक्नोलॉजी अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। कार्बन कैप्चर तकनीक से उत्सर्जन शून्य होगा, जिससे राज्य पर्यावरण-अनुकूल निर्माण का वैश्विक केंद्र बनेगा। स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए राजस्थान इनोवेशन फंड स्थापित होगा, जो युवा उद्यमियों को 1 लाख करोड़ रुपये का निवेश उपलब्ध कराएगा।

राजस्थान 2050 स्थाई समृद्धि की योजना एक सपना नहीं, वास्तविकता का खाका है। यह राज्य को भारत का इंजन बनाएगा, जहां हर राजस्थानी गर्व से कहेगा हमारा रेगिस्तान फूलों की घाटी है। आइए, इस विजन को साकार करें, क्योंकि स्थाई समृद्धि का आधार है संकल्प और कर्म। यह योजना चुनौतियों से भरी है जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या दबाव और वैश्विक मंदी। लेकिन राजस्थान की योद्धा भावना इन्हें पार कर लेगी।

पर्यटन क्षेत्र राजस्थान की सांस्कृतिक संपदा को स्थाई समृद्धि का माध्यम बनाएगा। जयपुर का हवा महल, उदयपुर की झीलें, जोधपुर का मेहरानगढ़ किला और जैसलमेर का सोनार किला-ये न केवल पर्यटकों को आकर्षित करेंगे, बल्कि इको-टूरिज्म के माध्यम से स्थानीय समुदायों को सशक्त करेंगे। 2050 तक 10 करोड़ पर्यटकों का लक्ष्य है, जिसमें 40 प्रतिशत इको-टूरिज्म से आएंगे। रेगिस्तान सफारी को सस्टेनेबल बनाया जाएगा, जहां ऊंट दौड़ के साथ वन्यजीव संरक्षण जुड़ेगा। सांस्कृतिक विरासत को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ले जाया जाएगा-वर्चुअल रियलिटी से किले घूमना संभव होगा। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देकर होमस्टे और हेरिटेज विलेज विकसित होंगे, जिससे गांवों की आय दोगुनी हो जाएगी। यह योजना राजस्थानी कला, संगीत और हस्तशिल्प को वैश्विक ब्रांड बनाएगी, जैसे बंधेज, ब्लॉक प्रिंट और मिनिएचर पेंटिंग।

शिक्षा और कौशल विकास बिना स्थाई समृद्धि अधूरी है। राजस्थान 2050 में हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए 5000 नए स्कूल और 100 विश्वविद्यालय खोले जाएंगे। वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर्स में एआई, रोबोटिक्स, सोलर टेक्नोलॉजी और सस्टेनेबल एग्रीकल्चर के कोर्स होंगे। लड़कियों की शिक्षा पर विशेष जोर होगा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 2.0 से लिंगानुपात 1:1 होगा। डिजिटल शिक्षा को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए स्टारलिंक जैसी सैटेलाइट तकनीक अपनाई जाएगी। स्वास्थ्य क्षेत्र में आयुष्मान राजस्थान योजना से हर नागरिक को मुफ्त इलाज मिलेगा, जिसमें टेलीमेडिसिन और एआई-आधारित डायग्नोसिस शामिल होंगे। 2050 तक जीवन प्रत्याशा 80 वर्ष हो जाएगी। बुजुर्गों के लिए वरिष्ठ सम्मान योजना चलेगी, जो सामाजिक सुरक्षा और एक्टिव एजिंग को बढ़ावा देगी।

जल प्रबंधन राजस्थान की सबसे बड़ी चुनौती है, लेकिन योजना इसे अवसर में बदल देगी। नर्मदा-चंबल लिंक परियोजना से 50 प्रतिशत जल संकट हल होगा। वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाया जाएगा, और डिसेल वाटर रिसाइक्लिंग प्लांट हर शहर में होंगे। थार में डिसेलिनेशन प्लांट से समुद्री जल मीठा किया जाएगा। इससे न केवल पेयजल उपलब्ध होगा, बल्कि उद्योगों के लिए भी। नदी पुनरुद्धार अभियान से बनास, लूनी और साबरमती बहेंगी, जो जैव विविधता बढ़ाएंगी।

सामाजिक समावेशन योजना का हृदय है। अनुसूचित जाति-जनजाति, महिलाओं और दिव्यांगों के लिए विशेष कोटा और योजनाएं होंगी। महिला सशक्तिकरण फंड से 1 करोड़ महिलाओं को उद्यमी बनाया जाएगा। युवाओं के लिए युवा राजस्थान कार्यक्रम में स्पोर्ट्स, एंटरप्रेन्योरशिप और लीडरशिप ट्रेनिंग होगी। शहरीकरण को नियोजित रखा जाएगा-स्मार्ट सिटीज जैसे जयपुर 2.0 में ग्रीन बिल्डिंग्स, इलेक्ट्रिक ट्रांसपोर्ट और जीरो वेस्ट मॉडल अपनाया जाएगा।

परिवहन नेटवर्क विश्वस्तरीय होगा। हाई-स्पीड रेल दिल्ली से जैसलमेर जोड़ेगी, जबकि हाइपरलूप जैसी तकनीकें परीक्षण होंगी। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देकर वायु प्रदूषण शून्य होगा। डिजिटल राजस्थान में 100 प्रतिशत ब्रॉडबैंड कवरेज होगा, जो ई-गवर्नेंस और ई-कॉमर्स को गति देगा।

2050 का राजस्थान केवल आर्थिक शक्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक होगा। लोक देवताओं की परंपरा, मरुस्थलीय जीवनशैली और आध्यात्मिकता को आधुनिकता से जोड़ा जाएगा। पुष्कर मेला, तीज त्योहार और गणगौर जैसे उत्सव वैश्विक आयोजन बनेंगे। कला अकादमियां डिजिटल प्लेटफॉर्म पर राजस्थानी चित्रकला और कविता को फैलाएंगी।

यह योजना चुनौतियों से भरी है जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या दबाव और वैश्विक मंदी। लेकिन राजस्थान की योद्धा भावना इन्हें पार कर लेगी। सरकार, निजी क्षेत्र, एनजीओ और नागरिकों का सहयोग जरूरी है। नीतिगत सुधार जैसे एक्ट ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और जीएसटी 2.0 इसे गति देंगे।

राजस्थान 2050 स्थाई समृद्धि की योजना एक सपना नहीं, वास्तविकता का खाका है। यह राज्य को भारत का इंजन बनाएगा, जहां हर राजस्थानी गर्व से कहेगा हमारा रेगिस्तान फूलों की घाटी है। आइए, इस विजन को साकार करें, क्योंकि स्थाई समृद्धि का आधार है संकल्प और कर्म।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

जय सोमनाथ !

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

वर्ष 2026 की शुरुआत में मुझे सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। यह सोमनाथ मंदिर पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष बाद भी मंदिर के शाश्वत और अविनाशी होने का पर्व था। अब 11 मई को मुझे एक बार फिर सोमनाथ जाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। इस बार यह यात्रा पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर के लोकार्पण की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में है। मैं उस क्षण को फिर जीने जा रहा हूं जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने मंदिर का लोकार्पण किया था। उस दिन, सोमनाथ में विध्वंस से सृजन तक की यात्रा फिर से जीवंत होगी। छह महीनों के भीतर सोमनाथ के इतिहास से जुड़े इन दो अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ावों का साक्षी बनना मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है।

सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं, हमारी सभ्यता का अटूट संकल्प है। इसके सामने लहराता विशाल समुद्र अनंत काल की अनूभूति कराता है। इसकी लहरें हमें सिखाती हैं कि तूफान चाहे कितने भी विकराल क्यों न हों, मनुष्य का साहस और आत्मबल हर बार फिर से उठ खड़ा होने में सक्षम है। तट से टकराती लहरें सदियों से यह उद्घोष कर रही हैं कि मानवीय चेतना को लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता है।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में लिखा है: प्रभासं च परिक्रम्य पृथिवीक्रमसंभवम्। अर्थात दिव्य प्रभास (सोमनाथ) की परिक्रमा पूरी पृथ्वी की परिक्रमा के समान है! जब लोग यहां दर्शन-पूजन के लिए आते हैं, तब उन्हें उस सभ्यता की अद्भुत निरंतरता का भी अनुभव होता है, जिसकी ज्योति कभी बुझाई नहीं जा सकी। कई साम्राज्य आए और गए, समय बदला और इतिहास ने ढेरों उतार-चढ़ाव देखे, फिर भी सोमनाथ हमारे हृदय में हमेशा बना रहा।

यह समय उन असंख्य महान विभूतियों के स्मरण का भी है, जो क्रूर आक्रांताओं के सम्मुख अडिग रहे। लकुलीश और सोम शर्मा जैसे मनीषियों ने प्रभास को शैव दर्शन का महान केंद्र बनाया। चक्रवर्ती महाराज धारसेन चतुर्थ ने सदियों पहले वहां दूसरा मंदिर बनवाया था। समय की कठिन परीक्षा के बीच भीम प्रथम, जयपाल और आनंदपाल जैसे शासकों ने आक्रमणों के विरुद्ध अपनी सभ्यता की ढाल बनकर मंदिर की रक्षा की थी। ऐसा माना जाता है कि महान राजा भोज ने भी इस पावन स्थल के पुनर्निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया था। कर्णदेव सोलंकी और जयसिंह सिद्धराज ने गुजरात की राजनीतिक और सांस्कृतिक शक्ति को पुनर्स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। भाव बृहस्पति, कुमारपाल सोलंकी और पाशुपताचार्यों ने इस तीर्थ को आराधना और ज्ञान के केंद्र के रूप में स्थापित करने में अमूल्य योगदान दिया। विशालदेव वाघेला और त्रिपुरांतक ने इसकी बौद्धिक और आध्यात्मिक परंपराओं की रक्षा की। महिपाल चूड़ासमा और राव खंगार चूड़ासमा ने विध्वंस के बाद पूजा-पाठ की परंपरा को पुनर्जीवित किया। पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर, जिनकी 300वीं जयंती मनाई जा रही है, उन्होंने सबसे चुनौतीपूर्ण समय में भी भक्ति की परंपरा को जीवंत रखा। बड़ौदा के गायकवाड़ों ने तीर्थयात्रियों के अधिकारों की रक्षा की। इसके साथ ही हमारी यह धरती वीर हमीरजी गोहिल, वीर वेगड़ाजी भील जैसे पराक्रमियों से धन्य हुई है। उनके साहस और बलिदान को आज भी याद किया जाता है।

1940 के दशक में स्वतंत्रता की भावना पूरे भारत में फैल रही थी। सरदार पटेल जैसे महान नेताओं के नेतृत्व में स्वतंत्र भारत की नींव रखी जा रही थी। ऐसे में एक बात जो उन्हें बहुत व्यथित करती थी, वह थी-सोमनाथ की दुर्दशा। 13 नवंबर 1947 को, दिवाली के समय, उन्होंने सोमनाथ के जर्जर अवशेषों के सामने खड़े होकर, समुद्र का जल हाथ में लेकर संकल्प लिया, "इस (गुजराती) नववर्ष पर हमारा निश्चय है कि सोमनाथ का पुनर्निर्माण होगा। सौराष्ट्र के लोगों को इसके लिए हर तरह से अपना योगदान देना होगा। यह एक पावन कार्य है, जिसमें हर किसी को भागीदारी निभानी होगी।" उनके इस आ ान ने सिर्फ गुजरात ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष को नए उत्साह से भर दिया।

दुर्भाग्यवश, सरदार पटेल अपने उस सपने को साकार होते नहीं देख सके, जिसके लिए उन्होंने स्वयं को समर्पित कर दिया था। इससे पहले कि जीर्णोद्धार के बाद सोमनाथ मंदिर भक्तों के लिए खुलता, उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। इसके बावजूद, प्रभास पाटन की पावन धरती पर उनका प्रभाव निरंतर महसूस किया जाता रहा है। उनके विजन को के.एम. मुंशी ने आगे बढ़ाया, जिन्हें नवानगर के जामसाहेब का समर्थन मिला। 1951 में मंदिर का पुनर्निर्माण पूरा होने पर राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के विरोध के बावजूद, डॉ. प्रसाद ने समारोह में हिस्सा लेकर इसे ऐतिहासिक बना दिया।

मुझे अक्टूबर 2001 का वह समय आज भी अच्छे से याद है, जब मैंने मुख्यमंत्री के रूप में दायित्व संभाला था। 31 अक्टूबर 2001 को, सरदार पटेल की जयंती के अवसर पर गुजरात सरकार ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण की 50वीं वर्षगांठ का भव्य आयोजन किया। इसी समय सरदार पटेल की 125वीं जयंती भी मनाई जा रही थी। इस कार्यक्रम में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी और तत्कालीन गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी की मौजूदगी ने इसे और भी गरिमापूर्ण बना दिया।

11 मई 1951 को अपने भाषण में डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि सोमनाथ मंदिर दुनिया को यह संदेश देता है कि अद्वितीय श्रद्धा और विश्वास को कभी नष्ट नहीं किया जा सकता। उन्होंने आशा व्यक्त की, कि यह मंदिर सदैव लोगों के हृदय में बसा रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि मंदिर के पुनर्निर्माण से सरदार पटेल का सपना साकार हुआ है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि सरदार पटेल की भावनाओं के अनुरूप लोगों के जीवन में समृद्धि भी लानी होगी। इसको लेकर उनके संदेश अत्यंत प्रेरणादायी रहे हैं।

पिछले एक दशक से हम इसी मार्ग पर चल रहे हैं। 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र से प्रेरित होकर सोमनाथ से काशी, कामाख्या से केदारनाथ, अयोध्या से उज्जैन और त्र्यंबकेश्वर से श्रीशैलम तक, हमने अपने आध्यात्मिक केंद्रों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया है। इसके साथ ही उनकी पारंपरिक पहचान को भी बनाए रखा है। आज बेहतर कनेक्टिविटी से ज्यादा से ज्यादा लोग यहां आ पा रहे हैं। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिल रहा है, आजीविका सुरक्षित हो रही है, साथ ही 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना और सशक्त हो रही है।

सोमनाथ की रक्षा और इसके पुनर्निर्माण के लिए जिन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान किया, उनका संघर्ष हम कभी नहीं भुला सकते। भारत के विभिन्न हिस्सों से आए लोगों ने इसकी भव्यता और दिव्यता को लौटाने में अपना अद्भुत योगदान दिया। उनकी ऐसी ही आस्था पूरे भारतवर्ष को लेकर भी थी। वे एकता की ऐसी अद्भुत डोर से बंधे थे, जिसे जमीनी सीमाओं में नहीं बांटा जा सकता। आज की विभाजित दुनिया में, सोमनाथ से मिलने वाली एकता की यह सीख पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। सोमनाथ अपनी गौरवशाली परंपरा के साथ हमेशा खड़ा रहेगा, क्योंकि यह हमारी साझा सभ्यता का प्रतीक है। इसी गौरव को नमन करते हुए बलिदान देने वाले वीरों की स्मृति में और दानवीरों की उदारता को याद करते हुए अगले एक हजार दिनों तक यहां विशेष पूजा आयोजित की जाएगी। यह देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि बड़ी संख्या में लोग इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं।

सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि जब कोई समाज अपनी आस्था, अपनी संस्कृति और अपनी एकता से जुड़ा रहता है, तब उसे लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता। आज भी हमारी सबसे बड़ी शक्ति यही साझा चेतना है, यही एकात्म भाव है। यही भावना हमें विभाजन से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में साथ चलने की प्रेरणा देती है।

मैं सभी देशवासियों से आग्रह करता हूं कि इस पावन अवसर पर पवित्र सोमनाथ धाम की यात्रा करें और इसकी भव्यता के साक्षात दर्शन करें। जब आप सोमनाथ के तट पर खड़े होंगे, तब उसकी प्राचीन प्रतिध्वनियों को अपने भीतर महसूस करेंगे। वहां आपको केवल भक्ति का अनुभव नहीं होगा, बल्कि उस सभ्यतागत चेतना की सशक्त धड़कन भी सुनाई देगी, जो कभी रुकी नहीं, जिसकी तीव्रता कभी कम नहीं हुई। वहां आप भारत की उस अपराजित आत्मा का अनुभव करेंगे, जिसने हर आघात के बावजूद अपनी पहचान और अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा। आप समझ पाएंगे कि इतने प्रयासों के बाद भी क्यों हमारी सभ्यता मिट नहीं सकी। वहां आपको चिर विजय के उस दर्शन का अनुभव होगा, जो सदियों से भारत की शक्ति बना हुआ है। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके लिए यह एकअविस्मरणीय अनुभव होगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

मूर्खता नहीं, मेहनत का महाकाव्य है गधा

विश्व गदर्भ दिवस (8 मई) पर विशेष.......

डॉ. कैलाश चन्द सैनी

गधा केवल एक पशु नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के विकास का वह मूक साक्षी है जिसने दुर्गम रास्तों पर श्रम की नई इबारत लिखी। विडंबना देखिए कि जिस प्राणी ने हमें प्रगति की राह पर आगे बढ़ाया, हमने उसे ही मूर्खता का विशेषण बना दिया। 8 मई 'विश्व गदर्भ दिवस' पर विशेष विश्लेषण-उपेक्षा के मुहावरों को पीछे छोड़, इस निष्ठावान और परिश्रमी साथी केद्ध प्रति सम्मान की पुनर्स्थापना का सटीक संकल्प।

मानव समाज में 'गधा' शब्द का प्रयोग लंबे समय से मूर्खता के विशेषण के रूप में होता रहा है। किसी की बुद्धि पर प्रश्नचिह्न लगाना हो तो उसे इस जीव की संज्ञा दे देना मानो एक सहज भाषाई प्रवृत्ति बन गई है। किंतु, यदि हम ठहरकर विचार करें, तो क्या यह तिरस्कार वास्तव में न्यायोचित है? वास्तव में, जिस जीव को हमने अपनी शब्दावली में अपमान का पर्याय बना दिया, वह प्रकृति के सबसे परिश्रमी, धैर्यवान और सहनशील प्राणियों में से एक है। 8 मई को मनाया जाने वाला विश्व गदर्भ दिवस मात्र एक औपचारिक तिथि नहीं, बल्कि सदियों से जड़ जमा चुकी रूढ़ियों को चुनौती देने और इस मूक, किंतु समर्पित सहचर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है।

साहित्यकारों की दृष्टि में ऋषि तुल्य धैर्य का प्रतीक :-गधे के प्रति समाज में प्रचलित दृष्टिकोण पर साहित्यकारों और चिंतकों ने सदैव गहन और मार्मिक कटाक्ष किया है। कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'दो बैलों की कथा' में गधे की तुलना ऋषि-मुनियों से करते हुए लिखा है कि "गधे में ऋषि-मुनियों के जितने गुण हैं, वे अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुके हैं" पर मनुष्य उसे मूर्ख कहता है। यह कथन गधे की उस असाधारण सहनशीलता की ओर संकेत करता है, जिसे मनुष्य ने उसकी कमजोरी मान लिया है। इसी प्रकार व्यंग्य के पुरोधा हरिशंकर परसाई की दृष्टि में गधा एक ऐसे 'दार्शनिक' का रूप ले लेता है, जो संसार के कोलाहल, तिरस्कार और विडंबनाओं के बीच भी अपने कर्म-पथ से विचलित नहीं होता। उसमें एक अद्भुत स्थिरता है- एक ऐसा मौन, जो बहुत कुछ कहता है।

शायरों और साहित्यकारों ने भी इस विडंबना को सूक्ष्मता से उकेरा है कि बोझ भले ही यह जीव उठाता है, पर अपनी कमियों को ढँकने के लिए मनुष्य ही उसे 'गधा' कहकर स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का असफल प्रयास करता है। साहित्यकारों का यह विचार हमें सचेत करता है कि गधा मूर्खता का प्रतीक नहीं, बल्कि धैर्य, संतोष और निष्ठा का सजीव प्रतिरूप है - एक ऐसा चरित्र, जो उपेक्षित होकर भी अपने कर्म में अडिग रहता है।

बुद्धिमत्ता: सतर्कता, जिसे हमने 'जिद' समझ लिया

गधों की बुद्धिमत्ता को लेकर समाज में व्याप्त धारणा वस्तुत: एक गहरा भ्रम है। वैज्ञानिक अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि गधों की स्मरण शक्ति अत्यंत प्रखर होती है; वे वर्षों पूर्व देखे गए मार्गों, स्थानों और साथियों को पहचानने की क्षमता रखते हैं। जिस व्यवहार को आम बोलचाल में गधे की जिद या अड़ियल स्वभाव कहकर उपहास का विषय बनाया जाता है, वह दरअसल उसकी स्वाभाविक सतर्कता और विवेकशीलता का परिचायक है। घोड़े के विपरीत, गधा किसी संभावित खतरे को भांप ले तो वह आगे बढ़ने से इनकार कर देता है। यह उसका अड़ियलपन नहीं, बल्कि परिस्थितियों का विवेकपूर्ण आकलन है - एक ऐसी समझ, जो उसे अनावश्यक जोखिम से बचाती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:- सभ्यता के अदृश्य आधारस्तंभ मानव सभ्यता के विकास की कहानी गधों के योगदान के बिना अधूरी है। जब परिवहन के आधुनिक साधन विकसित नहीं हुए थे, तब यही जीव व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम बना। मिस्त्र के पिरामिडों के निर्माण से लेकर सिंधु घाटी सभ्यता के व्यापारिक विस्तार तक, गधों ने दुर्गम मार्गों पर भार वहन कर आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान की। प्रसिद्ध सिल्क रोड पर ऊंटों के साथ-साथ गधों ने भी हजारों मील लंबी यात्राएं कर विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गधे वास्तव में इतिहास के वे मौन नायक हैं, जिनकी उपस्थिति अनिवार्य थी, किंतु जिनकी चर्चा अक्सर इतिहास के हाशिए पर सिमटकर रह गई।

राजस्थान के विशेष संदर्भ में प्रासंगिकता : -यद्यपि आधुनिक युग में मशीनीकरण ने परिवहन और श्रम के स्वरूप को बदल दिया है, फिर भी गधों की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। विशेषकर भारत के ग्रामीण अंचलों और राजस्थान जैसे भौगोलिक विविधताओं वाले प्रदेशों में उनकी भूमिका आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ईंट-भट्टों, निर्माण कार्यों और उन दुर्गम पहाड़ी या संकरे क्षेत्रों में, जहाँ मशीनें नहीं पहुँच पातीं, वहाँ आज भी गधा ही श्रम का विश्वसनीय साधन है।

सांस्कृतिक जुड़ाव: जयपुर जिले के लुनियावास गाँव में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला गधा मेला इस पशु के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व का जीवंत प्रमाण है। यह केवल एक व्यापारिक आयोजन नहीं, बल्कि लोक-जीवन में गधे की स्वीकृति और उसकी उपयोगिता का उत्सव भी है। शीतला माता के वाहन के रूप में इसकी धार्मिक प्रतिष्ठा भी उल्लेखनीय है।

'डंकी थेरेपी' एवं औषधीय उपयोग :- गधों की उपयोगिता अब केवल श्रम तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह मानवीय संवेदना और उपचार के क्षेत्र तक विस्तारित हो चुकी है। गधे स्वभाव से अत्यंत शांत, सौम्य और सहनशील होते हैं। यही विशेषताएँ उन्हें डंकी थेरेपी के लिए उपयुक्त बनाती हैं। ऑटिज़्म, मानसिक तनाव या भावनात्मक चुनौतियों से जूझ रहे बच्चों के लिए यह थेरेपी आशाजनक परिणाम दे रही है। गधों की सहज उपस्थिति व्यक्ति में आत्मीयता, विश्वास और मानसिक संतुलन विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है। वर्तमान समय में गधों के दूध की वैश्विक मांग भी तेजी से बढ़ रही है। औषधीय गुणों से युक्त यह दूध सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण के साथ-साथ स्वास्थ्य संबंधी अनेक उपयोगों के लिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

पारिस्थितिक संतुलन में भूमिका :-गधे केवल श्रम या उपयोगिता तक सीमित जीव नहीं हैं, बल्कि वे पारिस्थितिक संतुलन के भी महत्वपूर्ण घटक हैं। विशेष रूप से मरुस्थलीय और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वे वनस्पति के प्रसार में सहायक होते हैं। उनकी अद्भुत सहनशक्ति और प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवित रहने की क्षमता जलवायु परिवर्तन के वर्तमान संदर्भ में अध्ययन का विषय बनती जा रही है।

दृष्टिकोण में परिवर्तन का संकल्प : -विश्व गदर्भ दिवस हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि किसी भी प्राणी का मूल्यांकन हमारी पूर्वाठाहपूर्ण धारणाओं के आधार पर नहीं, बल्कि उसके वास्तविक योगदान और गुणों के आधार पर होना चाहिए। गधे की सहनशीलता को उसकी लाचारी और उसकी शांति को उसकी मूर्खता मान लेना हमारी वैचारिक संकीर्णता का परिचायक है। अब समय आ गया है कि हम अपनी भाषा और व्यवहार दोनों में परिवर्तन लाएँ। आइए, इस 8 मई को हम गधे को परिश्रम, निष्ठा और धैर्य के प्रतीक के रूप में पुनः स्थापित करने का संकल्प लें। परिश्रम जिसका आभूषण है, और धैर्य जिसका स्वभाव - वह गधा उपेक्षा का नहीं, सम्मान का पात्र है।

- डॉ. कैलाश चन्द सैनी,
वरिष्ठ लेखक एवं पूर्व मुख्य शोध एवं संदर्भ अधिकारी,
राजस्थान विधानसभा, जयपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 8 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 9:20 तक, शुभ योग रात्रि 2:30 तक, वणिज करण दिन 12:22 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग रात्रि 9:20 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 9:20 से आरम्भ होगा। भद्रा दिन 11:22 से रात्रि 1:12 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:26 तक, लाभ-अमृत 7:26 से 10:44 तक, शुभ 12:23 से 2:02 तक, चर 5:20 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:48, सूर्यास्त 6:59

मेष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

नवीन कार्यों से संबंधित सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या दूर हो सकती है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

तुला

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा।

कुंभ

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आज वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

मीन

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।